

● पढ़ो और गाओ :



किसी नदी के किनारे एक बीज पड़ा था। वह बहुत छोटा था। वहाँ एक चिड़िया आई। वह चोंच मारकर बीज को खाने लगी। तब बीज बोला—
“रुकी रहो, रुकी रहो, जमीन में गड़ने दो। डाल-पात होने दो, तब मुझे तुम खाना।”
चिड़िया चीं-चीं करती उड़ गई।

कुछ दिन बाद पानी बरसा। पानी और धूप पाकर बीज में अंकुर फूटा। कुछ दिन बाद वहाँ एक बकरी आई। कोंपलें देखकर उसके मुँह में पानी भर आया। वह उन्हें खाने चली। तब कोंपल ने कहा—

“रुकी रहो, रुकी रहो, जड़ को गहरे जाने दो। पानी, खाद खाने दो, तब मुझे तुम खाना।”
बकरी यह सुनकर में-में करती चली गई।
थोड़े दिनों के बाद बीज एक छोटा-सा पौधा बन गया। एक दिन गाय वहाँ आई। उसने पौधे को खाने के लिए मुँह खोला। इतने में पौधे ने कहा—



१. निम्नलिखित वाक्यों को क्रमबद्ध करके पुनः पढ़ो :

- (क) पानी और धूप पाकर बीज में अंकुर फूटा।
- (ख) किसी नदी किनारे एक बीज पड़ा था।
- (ग) अब मैं तुम सबके काम आ सकता हूँ।
- (घ) उसकी डालें बड़ी-बड़ी हो गईं।

२. चने को गीली मिट्टी में बोओ और अंकुरित होकर पौधा होने तक उसका निरीक्षण करो।

- उचित उच्चारण, आरोह-अवरोह के साथ कविता का वाचन करें। ध्यान से सुनने के लिए कहें। उचित लय के साथ सामूहिक, गुट एवं एकल वाचन कराएँ। कहानी में आई कविता विद्यार्थियों को अपने शब्दों में सुनाने के लिए प्रेरित करें।

द. बीज



“रुकी रहो, रुकी रहो, डाल-पात होने दो। पानी, खाद खाने दो, तब मुझे तुम खाना।”
यह सुनकर गाय रँभाती हुई चली गई।

बहुत दिन बीत गए। उसकी डालें बड़ी-बड़ी हो गईं। एक दिन फिर वही चिड़िया, बकरी और गाय वहाँ आईं। उन्होंने एक-दूसरे से पूछा, “वह छोटा पौधा कहाँ गया?” तभी पेड़ बोल उठा— “मैं ही बीज हूँ..... मैं ही अंकुर हूँ। मैं ही पौधा हूँ..... मैं ही पेड़ हूँ। अब मैं तुम सबके काम आ सकता हूँ।” यह सुनकर सब खुश हो गए।

— रामेश्वरदयाल दुबे

